मनोज
कॉमिक्स
मूल्य 7.00
राम-रहीम और भूत प्रेतों का हंगामा
CHAVAN STUDIO.

डबल सीक्रेट एजेण्ट ०० ½ राम-रहीम सीरीज़
राम-रहीम और भूत-प्रेतों का हंगामा
लेखक: विमल चटर्जी
चित्रांकन: दिलीप कदम. विजय कदम. (त्रिशूल कॉमिक्स आर्ट)

एक रात जब राम-रहीम गहरी नींद में सोये हुए थे तो रहीम सहसा चीखकर उठ बैठा।
राम...!
रहीम, क्या हुआ तुम्हें? तुम चीखे क्यों?

राम, मैं रहीम नहीं, बल्कि कालरा हूं! वह कालरा, जिसे तुमने कुछ सप्ताह पूर्व टीकमगढ़ की पहाड़ियों से फेंक दिया था। गुर्र...र... र...!
ओह!

क्या चाहते हो तुम मुझसे?
अपनी मौत का बदला...

...आज मैं तुझे जीवित नहीं छोड़ूंगा!
धड़ाक
उफ!

हा-हा-हा! आज तुझे मेरे हाथों कोई नहीं बचा पायेगा! मैं तुझे पीसकर रख दूंगा!
उफ! रहीम में तो गजब की ताकत आ गई है! क्या करूं?

ले मर!
उफ! मरा!

धड़ाक!
आह!

ही-ही-ही! अभी भी ज़िंदा है! बहुत जान है रे तुझमें।
हफ्फ! हफ्फ!

लेकिन आज मैं भी तुझे ज़िंदा नहीं छोड़ने वाला।
छोड़ो मुझे रहीम! मैं...! गड़प... गड़प!

तभी रहीम के आस-पास से नीले रंग का धुआं उठने लगा और वहां एक अदृश्य आवाज गूंजी।
कालरा, यदि तुम अपनी खैरियत चाहते हो तो राम को छोड़ दो।
कौन हो तुम?

प्रश्न मत करो! केवल मेरे आदेश का पालन करो, वरना तुम्हें रहीम के शरीर से निकलने का भी मौका नहीं मिलेगा।
नहीं! मैं तुम्हारे आदेश का...

कालरा की आत्मा के बाहर निकलते ही रहीम भी बेहोश होकर फर्श पर लुढ़क गया। तब वहां फोमांचू प्रकट हुआ।

दोनों बेहोश हैं। इन्हें होश में लाना चाहिए।

फोमांचू दोनों को बिस्तर पर लिटाकर उन्हें होश में लाया और उन्हें सारी बात बतादी। तभी—

दरवाजा खोलो बेटे।

???

!!!

राम ने अपनी मम्मी को अपनी चोट के बारे में एक कहानी गढ़कर सुनाई और उन्हें वापस भेज दिया।

अगले दिन रहीम को साथ लेकर राम प्रोफेसर दिवाकर से मिला और उन्हें सारी बात बताई।
मामला गम्भीर है राम बेटे, लेकिन तुम दोनों मुझसे कल किसी भी समय मिलना। मैं तुम्हें ऐसा तावीज बनाकर दूंगा, जिससे कालरा की आत्मा आसानी से तुम्हारे निकट नहीं आयेगी।
ठीक है, तो फिर हमें आज्ञा दीजिए।

दोनों प्रोफेसर से विदा लेकर सारा दिन शहर में घूमते रहे और मौज-मस्ती लेते रहे। लेकिन जब रात में वे घर वापस लौट रहे थे तो सहसा—
तुम खामोश क्यों हो रहीम? कुछ बोलो ना।

लेकिन उधर रहीम—
गुर्र...र...र...!
प्यारे दोस्तो, यहां तक की कहानी आप मनोज कॉमिक्स के इसी सेट में प्रकाशित "राम-रहीम और भयानक शैतान" में पढ़ चुके हैं। अब आगे पढ़े।

अपने पीछे से उभरती भयानक गुर्राहट को सुनकर राम ने जैसे ही पलटना चाहा, अचानक मोटरसाइकिल सड़क पर तेजी से गोल चक्कर काटने लगी।
गुर्र...र...र...!
हे ईश्वर! यह क्या हो रहा है?

राम ने मोटरसाइकिल को रोकने की काफी कोशिश की, लेकिन सफल नहीं हो सका।
ही-ही-ही! गुर्र... र्र... र्र...!
ओह! कालरा।

तभी —
ही-ही-ही! अब तुम नहीं बचोगे सुअर।
उफ! नहीं!

कालरा, रहीम, मेरी गर्दन छोड़ो, वरना भयानक एक्सीडेंट हो जाएगा। तब मेरे साथ तुम भी मरोगे।
कोई परवाह नहीं।

उफ! अब क्या करूं? लगता है, आज यह मेरे प्राण लेकर ही रहेगा।

फिर हो सकता था कि वहां एक भयंकर दुर्घटना हो जाती कि अचानक मोटरसाइकिल समेत वे एक नीली रोशनी के दायरे में आ गये...

...और मोटरसाइकिल अपने आप रुक गई।
थैंक्स गॉड! कम से कम एक संकट से तो छुटकारा मिला, लेकिन शैतान कालरा की आत्मा से कैसे निपटूं। मेरा तो दम घुटा जा रहा है।
ही-ही-ही! गुर्र.. र्र... र्र...!

तभी राम के मस्तिष्क में प्रोफेसर दिवाकर की आवाज गूंजी।
राम, कालरा इस नीली रोशनी को ज्यादा समय तक सहन नहीं कर पायेगा अतः तुम उससे छुटकारा पाकर भाग लो और हो सके तो किसी निकटवर्ती मंदिर या मस्जिद की शरण लो।

तभी —
उफ! आह! फिर वही पीड़ा।

उफ! इस अवस्था में मैं ज्यादा देर नहीं रह सकता।

अचानक रहीम बुरी तरह छटपटाने लगा। इसी के साथ उसके हाथों की गिरफ्त राम की गर्दन पर ढीली पड़ गई।
आहा! दम में दम आया। मौका अच्छा है, किसी तरह रहीम को मोटरसाइकिल से अलग करूं और भाग निकलूं।

अगले ही पल —
कड़ाक!
आह!

चोट खाते ही रहीम मोटरसाइकिल से नीचे सड़क पर गिर पड़ा।
धप्प!
उफ!

और —
धोखा! मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगा राम!
फट-फट!

बचकर कहां जाओगे राम!
रहीम सही सलामत है। कालरा की आत्मा अब ज्यादा देर तक उसके भीतर नहीं रह पायेगी। तब रहीम अपने आप घर पहुंच जायेगा।

ऐसा सोचकर राम ने गर्दन पल्टाकर पीछे देखा तो उसके होश उड़ गये।
अरे बाप रे! वह तो मेरा पीछा कर रहा है।

राम ने मोटरसाइकिल की स्पीड बढ़ा दी।

लेकिन परिणाम—
उफ! फासला तो बराबर कम ही होता जा रहा है। अगर उसके दौड़ने की यही रफ्तार रही तो वह बहुत जल्द मुझे पकड़ लेगा।

हे ईश्वर! अब मैं क्या करूं? कम्बख्त पीछा छोड़ने का नाम ही नहीं ले रहा है।

तभी राम को ध्यान आया।
प्रोफेसर अंकल ने कहा था कि यदि कोई मौका आये तो किसी मन्दिर या मस्जिद की शरण लेना...

...लेकिन यहां आस-पास में मन्दिर-मस्जिद कहां होगा। मुझे तो कुछ ध्यान नहीं आता।

तभी—
टन...टन...टन!
अरे वाह! यह तो किसी मन्दिर के घण्टे की आवाज मालूम पड़ती है। शायद वहां आरती हो रही है।

अतः राम ने तुरन्त आवाज़ की दिशा में मोटरसाइकिल मोड़ दी।
तू आज मेरे हाथों नहीं बचेगा छोकरे। आज मैं तेरे शरीर के टुकड़े-टुकड़े करके ही रहूंगा।

शुक्र है प्रभु का! मैं बिल्कुल ठीक समय पर यहां पहुंच गया।

अरे! यह तो मन्दिर में आ पहुंचा है। गुर्र...र्र...र्र...!

अब शायद कालरा मेरा कुछ नहीं बिगाड़ पाये!
ही-ही-ही! वह सोच रहा है, यहां शरण लेकर शायद वह मेरे हाथों से बच जायेगा! कदापि नहीं!

प्रणाम पुजारी जी!
जीते रहो बेटा!

बेटा, तुम्हारे चेहरे को देखकर लगता है, जैसे तुम बहुत घबराये हुए व चिंतित हो।
आप ठीक समझे हैं पुजारी जी! बात ही कुछ ऐसी है।
र राम ने
जारी जी को सबकुछ बता दिया...

...और अन्त में बोला —
मुझे डर है पुजारी जी कि अब वह यहां भी न आ जाये!
हा-हा-हा! तो वह दुष्ट आत्मा यहां आने की हिम्मत भी रखती है!

घबराओ नहीं बेटा! वह आत्मा रमात्मा से टक्कर लेने की कोशिश हरगिज नहीं करेगी...

...यदि उसने ऐसी दुष्ट हिम्मत की तो उसका अंजाम बुरा होगा। विश्वास न हो तो कुछ देर बाद स्वयं अपनी आंखों से देख लेना...

...अब तुम जरा बैठो, मैं प्रभु की आरती उतार लूं!
जी!

उसके बाद पुजारी आरती उतारने लगा और राम बाहर बैठकर श्रद्धा से भगवान विष्णु को निहारने लगा।
ओम् जय जगदीश...!

इधर बाहर —
देखता हूं, मुझे इस पवित्र स्थान के भीतर जाने से कौन रोकता है।

लेकिन जैसे ही उसने मन्दिर के भीतर जाने के लिए पहली सीढ़ी पर कदम रखा।
कड़... कड़... कड़...!
ओह! यह क्या? लगता है, कयामत आने वाली है।

कड़...कड़...कड़...!
ही-ही-ही! लगता है, प्रकृति या मूर्ख भगवान मुझे डराने का प्रयत्न कर रहा है।

गुर्र...र्र...र्र! लेकिन मैं इन गीदड़ भभकियों से डरने वाला नहीं।

उसने दूसरी सीढ़ी पर कदम रखा।
गुर्र...र्र...र्र!
कड़ाक!

कड़ाक्!
आई...ई...ई...!

और रहीम—

चीख सुनकर राम और पुजारी दौड़े-दौड़े बाहर आये।
ओह!
रहीम!

यह तो पूरी तरह जल गया है। हे भगवान, यह तूने क्या किया।

हू...हु...हु... हू! रहीम, मेरे भाई, यह तुम्हें क्या हो गया?

क्या यही तुम्हारा साथी है बेटे, जिसमें दुष्ट आत्मा ने प्रवेश किया हुआ था।
हां पुजारी जी...

...लेकिन लगता है, उस दुष्ट आत्मा ने इसे मौत के घाट उतार दिया है।
असम्भव! वह दुष्ट आत्मा इसका शरीर छोड़कर अवश्य जा सकती है, लेकिन प्रभु के द्वार पर इस निर्दोष को नहीं मार सकती...

...तुम हटो, मैं देखता हूं।

बेटा, इसकी नब्ज चल रही है! यह अभी जिंदा है।
क्या सच पुजारी जी?

प्रभु की तरह यह भी बिल्कुल सत्य है बेटा। तुम इसे भीतर ले चलने में मेरी मदद करो।

शाबाश! संभालकर!

भीतर –
चिंता मत करो बेटा, तुम्हारा मित्र इस समय प्रभु की शरण में है। अब इसे कुछ नहीं होने वाला। तुम देखना, सुबह तक यह बिल्कुल भला-चंगा हो जायेगा...

...अच्छा बेटा, तुम यहीं आराम करो। मैं अपने कार्य निपटाता हूं। यदि काम हो तो मुझे आवाज दे लेना।

जी पुजारी जी! आपका बहुत-बहुत धन्यवाद!

पुजारी के जाने के बाद राम बेहोश रहीम के पास बैठ गया और उसकी जिंदगी के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने लगा।
हे प्रभु! मेरे भाई को भला-चंगा कर दे, वरना यदि इसे कुछ हो गया तो मैं भी जीवित नहीं बचूंगा।

फिर कब उसकी आंख लग गई, इसका उसे आभास ही नहीं हुआ।

अगले दिन भोर की पहली किरण के साथ ही रहीम उठ बैठा।
अरे, मैं कहां हूं?

ओह! यह तो कोई प्राचीन मन्दिर प्रतीत होता है, लेकिन मैं यहां कैसे?

अरे, राम भइया?

ये भी यहां हैं। कुछ चक्कर समझ में नहीं आ रहा।

राम भइया! राम भइया! उठो राम भइया!

आहा! रहीम, तुम ठीक तो हो ना?
क्यों, क्या हुआ था मुझे?

आहा! तुम तो बिल्कुल ठीक हो। जलने का कोई भी निशान तुम्हारे शरीर पर नहीं है।
यह तुम क्या कह रहे हो राम भइया!

मैं ठीक कह रहा हूं मेरे भाई! कल रात तुम बिजली गिरने से बुरी तरह से जल गये थे और तुम्हारे जीवित बचने की कोई उम्मीद नहीं रही थी...

...लेकिन प्रभु की अपार कृपा है। उनके चमत्कार से तुम न केवल जीवित हो, बल्कि तुम्हारा जला हुआ शरीर भी बिल्कुल ठीक हो गया है।

...मैं यह तो मान सकता हूं कि कालरा की आत्मा ने फिर मुझमें प्रवेश करके तुम पर हमला किया था...

...लेकिन मैं यह मानने के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं कि मुझ पर बिजली गिरी थी और मैं बुरी तरह जल गया था।
यह बात है तो आओ, मैं तुम्हें इस मन्दिर के पुजारी जी से मिलवाता हूं। तब तुम्हें मेरी बात पर विश्वास आ जायेगा।

अगले पल –
पुजारी जी, पुजारी जी, कहां हैं आप?

पुजारी जी! कहां हैं आप? देखिये, आपके कहने के मुताबिक मेरा भाई बिल्कुल भला-चंगा हो गया है।

लेकिन काफी तलाश करने के बावजूद उन्हें मन्दिर के पुजारी जी कहीं नहीं मिले।
यहां तो कोई नहीं है भइया।
पता नहीं कहां चले गये वे?

कहीं तुम्हें कोई भ्रम तो नहीं हुआ?
कैसी बात करते हो तुम? कल रात गेरुए वस्त्र में मैंने उन्हें अपनी आंखों से यहां देखा था। तब वे आरती गा रहे थे।

तो अब वे कहां चले गये। सुबह के समय तो उन्हें यहां रहना ही चाहिए था। क्योंकि ईश्वर की पूजा-पाठ सुबह ही तो होती है।
वह देखो, कोई वृध्द आ रहे हैं। आओ, उन्हीं से पूछते हैं।
???

नमस्कार बाबा!
जीते रहो बेटा, कहो क्या बात है?

बाबा! कल रात मैंने यहां एक पुजारी जी को देखा था। क्या आप बता सकते हैं, वे इस समय कहां होंगे?
पुजारी जी को? यह तुम क्या कह रहे हो बेटा...

...आज बीस सालों से तो इस मन्दिर में ठाकुर की सेवा मैं स्वयं कर रहा हूं, फिर तुम किन पुजारी जी की बात कर रहे हो।
!!!
क्याऽऽऽ?

मेरी बात का यकीन करो बेटा।
तो... तो फिर वे कौन थे, जो रात मुझे मन्दिर में आरती करते मिले थे। और जिन्होंने मुझे सांत्वना दी थी कि मेरा भाई सुबह तक बिल्कुल ठीक हो जायेगा।

शायद तुम्हें कोई भ्रम हुआ होगा। वैसे मैं कल रात आरती करने के बाद मौसम खराब होने के कारण जल्दी ही अपनी कोठरी में सो गया था।

वो देखो, वह रहा कमरा।

अच्छा, अब मेरा पूजा का वक्त हो रहा है। मैं चलता हूं।
कहकर...

...वृध्द मन्दिर के अन्दर की ओर बढ़ गया।
बस भइया, हो गया न तुम्हारे संदेह का निवारण। अब चलो यहां से। मुझे बड़े जोरों से भूख लग रही है।

तो क्या जो पुजारी जी मुझे रात को मिले थे, वे साक्षात भगवान थे?
क्या सोचने लगे भइया? चलो ना यहां से।

आ... हां, चलो।

कुछ देर बाद —
हम घर ही चल रहे हैं ना भइया ?
नहीं, इस समय हम प्रोफेसर दिवाकर अंकल के यहां चल रहे हैं।
ओफ्फो! क्या मुसीबत है। यह सुबह-सुबह भला प्रोफेसर अंकल से मिलने की क्या तुक हुई ?
इन हालातों में हमारा उनसे मिलना बहुत जरूरी हो गया है रहीम। हम नाश्ता उन्हीं के यहां कर लेंगे...
...फिर उन्होंने स्वयं ही आज किसी समय अपने यहां आने के लिए कहा था।
ठीक है भइया! जैसा उचित समझो करो। मैं तो कालरा की आत्मा से परेशान हो गया हूं।
कुछ देर बाद वह प्रोफेसर दिवाकर की कोठी पर थे।
आओ बेटे, मैं तुम्हारे ही आने का इन्तजार कर रहा था।
हमारे आने का इन्तजार... और वह भी...।
अरे बैठो तो सही भाई, फिर सब बताता हूं।
सुनो भाई, यहां तक की बात तो मैं जानता हूं कि जब तुम सारा दिन मौज मस्ती लेने के पश्चात् रात के समय घर वापस लौट रहे...
...थे तो कालरा की आत्मा ने रहीम के माध्यम से दुबारा तुम पर आक्रमण किया था...

...और यदि ऐन मौके पर मैं तुम्हारी मदद न करता तो शायद कल रात ही कालरा तुम्हें मौत के घाट उतार देता...
...और शायद रहीम भी मारा जाता।
हां-हां अंकल, ऐन मौके पर नीली रोशनी के साथ ही मैंने आपकी आवाज सुनी थी...

...लेकिन अंकल, आपको हमारी उस स्थिति के बारे में कैसे मालूम हुआ था।
योग विद्या द्वारा। मैं योग विद्या द्वारा तुम दोनों पर बराबर नजर रखे था, क्योंकि मुझे संदेह था कि कालरा की आत्मा रात्रि होते ही तुम पर फिर हमला कर सकती है...
...अब तुम यह बताओ कि उसके बाद क्या हुआ? कालरा की आत्मा के हाथों तुम कैसे बचे?

तब राम ने प्रोफेसर को सारी बात बता दी।
आश्चर्यजनक! रात वाले पुजारी का बाद में कुछ पता नहीं चला।
यही बात तो मुझे भी आश्चर्य में डाले हुए है।
तभी नौकर नाश्ता और कॉफी ले आया।
शुक्र है!

और वे बात करने के साथ-साथ नाश्ता करने में जुट गये।

राम बेटे, तुम्हारी बात से स्पष्ट है कि स्वयं ईश्वर ने उस समय तुम्हारी मदद की थी।

मैं भी यही सोच रहा हूं अंकल...

...खैर, अब आप यह बताइये कि आपने वह तावीज तैयार कर लिये हैं या नहीं, जिनके लिये आपने मुझसे कहा था।

अरे भाई, कैसे तैयार करता? सारा दिन तो मैं ध्यान मग्न बैठा तुम पर निगाह रख रहा था।

ओ माई गॉड! हमने तो सोने में सारे रिकॉर्ड तोड़ दिये।

फालतू की बातें बंद करो रहीम और जल्दी से तैयार हो जाओ। प्रोफेसर अंकल ने हमें दिन डूबने से पहले बुलाया था, जबकि अब रात हो आई है।

हम एक जरूरी काम से किसी दोस्त के घर जा रहे हैं मम्मी! लौटकर सारी बात बतायेंगे।
ठीक है, लेकिन यदि जल्दी घर न लौटे तो आज मुझसे बुरा कोई नहीं होगा।

बाहर निकलकर दोनों ने एक टैक्सी पकड़ी और प्रोफेसर के घर की ओर चल पड़े।
ड्राइवर, रफ्तार तेज करो। हमें बहुत जल्दी है।
जी साहब!

जब वे प्रोफेसर दिवाकर के बंगले पर पहुंचे तो चारों तरफ अंधकार फैल चुका था।

रहीम, जल्दी से भाड़ा चुका ओ।

भाड़ा देकर टैक्सी के जाने के बाद दोनों बंगले के गेट पर पहुंचे।
कमाल है! चौकीदार कहां चला गया?

चौकीदार - चौकीदार!

कई बार आवाजें देने पर भी चौकीदार नहीं आया।
चलो, कुंडा हटाकर खुद ही गेट खोलते हैं।

अरे, कुंडे पर तो ताला लगा है।

समझ में नहीं आता। आखिर चक्कर क्या हो सकता है। प्रोफेसर अंकल ने तो हमें दिन छुपने से पहले ही बुलाया था।
भइया, क्यों न हम दीवार फांदकर भीतर घुसें। कहीं ऐसा न हो कि प्रोफेसर अंकल ने कुछ सोचकर ही ऐसा बन्दोबस्त किया हो।

अब तो भीतर जाना ही होगा। मेरा दिल तो यह कह रहा है कि कहीं प्रोफेसर अंकल किसी मुसीबत में न हों।

आओ मेरे साथ! हम पिछवाड़े से भीतर प्रवेश करेंगे।

शीघ्र ही –
मेरा हाथ पकड़ो रहीम।

शाबाश!

कुछ देर बाद वे बंगले के भीतर लॉन में थे।
कमाल है! पूरे बंगले में अंधेरा छाया हुआ है। आखिर प्रोफेसर अंकल हैं तो कहां हैं?
यही बात तो मेरी भी समझ में नहीं आ रही। आखिर नौकर-चाकर तो दिखाई देने चाहिए थे।
राम भइया, मेरा दिल न जाने क्यों घबरा-सा रहा है।
यह यहां के माहौल का असर है। खैर, फिर भी तुम सावधान रहना।
तभी –
गुर्र... र्र... र्र!
ओह! यह किस जानवर की गुर्राहट हो सकती है।
आवाज तो प्रोफेसर अंकल के कुत्ते जैटू की मालूम पड़ती है।
लेकिन इतनी भयानक और हिंसक गुर्राहट? कहां है वह?
देखो, वह आ रहा है।
गुर्र... र्र.. र्र!
ओह! यह तो बहुत ही भयानक और हिंसक नजर आ रहा है, और उसके इरादे भी मुझे कुछ ठीक नजर नहीं आ रहे।
गुर्र... र्र... र्र...! भौं... भौं... भौं...!
सावधान रहीम, यह हम पर आक्रमण करने की तैयारी में है।

लेकिन राम भइया, जैट्र तो हमें अच्छी तरह से जानता है। हमारी गंध भी पहचानता है, फिर...?

रहीम बचो!
गुर्र...र्र...र्र!

राम तो उछलकर बच गया, लेकिन रहीम कद्दावर जैट्र के जबड़े में आने से नहीं बच सका।
गुर्र...र्र...र्र!
उफ!
आह!

ओफ! यदि अब मैंने एक क्षण की भी देरी की तो वह रहीम को चीड़-फाड़कर रख देगा।

अगले ही पल-
धांय-धांय!

उफ! बाल-बाल बचा!
शुक्र है, निशाना सही बैठा।

रहीम, तुम ठीक तो हो ना?
हां भइया, फिलहाल तो ठीक हूं। पर हां, यदि तुमने जरा भी देर कर दी होती तो...!
अरे, तुम्हारी बांह से तो बहुत खून बह रहा है। लाओ, मैं पट्टी बांध दूं।
राम भइया! आखिर जैट्टू ने हम पर हमला क्यों किया, जबकि वह हमें अच्छी तरह जानता था।
मुझे तो कुछ गड़बड़ मालूम होती है। कहीं यह करामात कालरा की आत्मा की ही न हो।
भइया, तब तो प्रोफेसर अंकल की जान खतरे में हो सकती है।
हां, हो सकती है। जल्दी चलो, हम भीतर चलकर उनकी खैर-खबर लेते हैं।
दोनों बंगले के भीतर प्रविष्ट हुए।
हर तरफ अंधेरा ही अंधेरा है। कुछ भी सुझाई नहीं दे रहा है।
ठहरो, मैं टॉर्च जलाता हूं।

फिर राम ने टॉर्च निकालकर जला ली।
प्रोफेसर अंकल का कमरा उस तरफ है। आओ!
चलो!
रिवॉल्वर निकाल ही लूं।

प्रोफेसर अंकल, कहां हैं आप?

आ गये तुम दोनों?
जी हां, लेकिन यह आपने पूरे बंगले में अंधेरा क्यों कर रखा है?

कालरा की आत्मा के कारण। तुम टॉर्च बुझा दो।

राम ने टॉर्च बुझा दी। अगले ही पल वहां किसी के गुर्राने की आवाज़ गूंजी।
गुर्र...र्र...र्र!
अंकल, यह अचानक आपके गले को क्या हुआ?

कुछ नहीं, जरा ठण्ड लग गई है। तुम दोनों मेरे पास आओ, ताकि मैं अपनी ईजाद की हुई तावीजें तुम दोनों को पहना सकूं।
राम भइया, मुझे तो खतरे की गंध आ रही है।
मुझे भी कुछ ऐसा ही आभास हो रहा है। अंकल का यह रवैया निःसंदेह रहस्य-मय है।
तभी प्रोफेसर के साये ने उन दोनों पर झपट्टा मारा।
ओह! अंकल, यह आप क्या कर रहे हैं?
गुर्र...र्र...र्र...!
सहसा प्रोफेसर दिवाकर की आवाज बदल गई।
ही-ही-ही! गुर्र...र्र...र्र...!
अब तो तुम्हारी समझ में आ गया होगा कि मैं कौन हूं और यह सब क्या चक्कर है?
ओह! कालरा!

हा-हा-हा! बिल्कुल ठीक पहचाना तुमने। आज तुम्हें मेरे हाथों से कोई नहीं बचा सकेगा।

आह!
उफ!

तभी –
कालरा, छोड़ दो इन दोनों को।
कौन हो तुम?

मैं वही हूं, जिससे पिछली बार तुम राम के घर से डरकर भागे थे।
ओह! लेकिन इस बार मैं हरगिज नहीं भागूंगा।

भागोगे तो तुम तब न, जब मैं तुम्हें भागने दूंगा।
बड़े जियाले बन रहे हो। यदि हिम्मत हो तो जरा मेरे सामने आओ।

तुम्हारी इस अन्तिम इच्छा को मैं अवश्य पूरी करूंगा। लो, मैं सामने आ रहा हूं।
आह! चचा, जल्दी सामने आओ, वरना हमारा दम घुट जायेगा।

और अगले ही पल–
हैं! तुम! कलियुग के भगवान् फोमांचू!
हा-हा-हा! अच्छा हुआ तुमने मुझे पहचान लिया!
फोमांचू! अच्छा यही होगा कि तुम मेरे काम में रोड़ा मत अटकाओ। मैं राम से अपनी मौत का बदला लेकर ही रहूंगा।
हा-हा-हा! और मैं तुम्हें इस गोले में कैद करके अपने देश ले जाऊंगा और तुम पर विशेष प्रयोग करूंगा, क्योंकि भविष्य में तुम मेरे बहुत काम आ सकते हो।
नहीं, तुम ऐसा कदापि नहीं कर पाओगे।
तुम्हें मेरी बात पर अभी विश्वास आ जायेगा कालरा। लो देखो।
फोमांचू के कहने भर की देर थी कि...
...दिवाकर उर्फ कालरा के इर्द-गिर्द फैले नीले रंग के धुएं ने उसे बुरी तरह से जकड़ लिया और दिवाकर पीड़ा से चीखता हुआ उछलने-कूदने लगा, जबकि राम-रहीम उसके पंजे से आजाद हो चुके थे।
आई...ई...ई...!
???

मुझे आज़ाद कर दो फोमांचू मुझसे और पीड़ा बर्दाश्त नहीं हो पा रही है।
???

यदि पीड़ा बर्दाश्त नहीं हो पा रही तो चुपचाप प्रोफेसर के शरीर से बाहर निकल आओ।
नहीं-नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। मुझे राम से बदला लेना है।

तब तड़पो मज़े से।
आह...!
उफ!
हाय!

लेकिन जल्दी ही कालरा की आत्मा ने हार मान ली।
ठहरो फोमांचू, ठहरो। मैं प्रोफेसर के शरीर से बाहर आ रहा हूं...

...लेकिन तुम मुझे वचन दो कि तुम मेरा कोई अहित नहीं करोगे।
वचन दिया।

और -
हफ्फ! हफ्फ!
???
लो, मैंने प्रोफेसर को छोड़ दिया। अब तुम भी मुझे इस धुंध से मुक्त कर दो।
हा - हा-हा! कालरा, मैंने तुम्हें तुम्हारा कोई अहित न करने का वचन दिया था, न कि तुम्हें आज़ाद करने का...
... और मैं अच्छी तरह जानता हूं कि आज़ाद होने के बाद तुम फिर राम-रहीम को मारने की कोशिश करोगे। जबकि मैं उन्हें मरने नहीं देना चाहता...
... इसलिए तुम्हें मेरे साथ चलना होगा। आओ, इस गोले में चले आओ। आज से यही तुम्हारा घर होगा और मैं ही तुम्हारी देख-रेख करूंगा।
कहकर...

विदा दोस्तो!

फिर बिन्दुओं में विघटित होकर वह वहां से ओझल हो गया।

अंकल! हमारी समझ में यह नहीं आया कि आप कालरा की आत्मा के वश में कैसे आ गये?

बस, मुझसे थोड़ी-सी लापरवाही हो गई थी, जिसके कारण ही वह मेरे शरीर में प्रवेश कर गया था।

खैर, शुक्र है खुदा का कि हम भूत-प्रेतों के हंगामे से बच गये।

समाप्त